

१०६६॥

(१)

१०६६॥



"Joint project of the Reliance Seashodhi Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Prakashan, Mumbai."

सर्वयतादुद्दाध्यायप्रारंभाः ॥ श्रीरघुविरायनमः ॥

(१)

11911

श्रीमाहागणाधीपतयेनमः ॥ आध्यायापरिसञ्चाध्यायपरिकर ॥ ज्ञेसापकंपक
 चठेदिनकर ॥ कीं शुक्लपक्षीं हुनिचंद्र ॥ कक्षाविशेषवाटति ॥ १ ॥ कीं अध्या
 सकारितां वोटेशान ॥ योगसाधने समाधीजाण ॥ कीं वटबोजबोस्तोरेपुणी ॥
 दीवसंदिवसञ्चधीक ॥ २ ॥ कीं बाकपणापास्यानीपंरित ॥ अधीकाधीकवि
 त्यतिवाटत ॥ कीं क्रष्णावेणिमुक्तीं पंक्तिदिसत ॥ परिपुढेविशाक्तोयैपं ॥ ३ ॥
 कीं अग्रापासानीमुक्ताकडे ॥ युक्तदज्ञागातीवोट ॥ कीं गुरुभजनकरितां
 जातुजे ॥ ज्ञानकाकाविशेष ॥ ४ ॥ ज्ञाज्ञानमञ्चविष्यंत ॥ तोंतों तपश्चयीवाट
 त ॥ किं साधुसमागमकरितां बहुत ॥ दयाल्लमावाटति ॥ ५ ॥ कीं वाकारितां नी
 छामदान ॥ कीं तिनेभरनीभुवन ॥ कीं विरश्रीयेविधरितां ज्ञांगवणप्रतापविशेषवाट

11911

१८१

कीं वाकरितां श्वेहादरा ॥ मैत्रिवोटे अपार ॥ कीं वाकरितां परोपकारा ॥ युद्धविशेष
 वोटेपे ॥ ७ ॥ तेशिरामकथागोडबहुता ॥ विशेषपुठे रसचढता ॥ जेविवर्षवीकाळें
 पुरयेता ॥ गंगेशि जेसाउल्हासें ॥ ८ ॥ गंगेचापुरमागुतावोहटा ॥ हादिवसें दिवसआ
 धीकदाटे ॥ चतुरप्रेमकजरिशोताभटा ॥ तरिवृकेयाशिवाठे बानंद ॥ ९ ॥ ९ ॥
 शोताभटलियामतिमंद ॥ तरिमाबकाव परतन्वाबानंद ॥ जेसासुर्यमावक्तवा
 अरविंद ॥ संकोच्चानजायेपे ॥ १० ॥ आसादहङ्गमोध्याईकथन ॥ जान्हवितिरिंर
 घुनंदन ॥ क्षिंग्रीष्ववक्षातकिलाण ॥ तणाजे पदुउक ॥ ११ ॥ त्यजुनियांमायाजाक ॥
 नीरंजनीयोगिजेसानिर्मिक ॥ तैसारामतमाकनिक ॥ जान्हवितीरिंक्ष्मीभैला ॥ १२ ॥ शै
 तोंतथें गुरुकभक्तधोर ॥ तयाशिल्पणोराघवेंद्र ॥ परपाराशिसत्वर ॥ आस्ता आंतो नेइजे ॥ १३

3

11211

भवाव्योत्तरवयादुस्तरा ॥ नामनोकाजान्वीपवित्रा ॥ तोरबुविरराजीवनेत्रा ॥ प्रा
 र्थनाकरियुत्थकांची ॥ १३ ॥ भणगायुठेंश्चिरसागरा ॥ मृणेमजभुकलाग्नीथोरा ॥ कीं
 वाच्यस्पन्निमुदासविच्चारा ॥ पुस्येंजैसा सादिगेये ॥ १४ ॥ किंधिक्लराशि जान्हुकुमारिपृष्ठ
 णेमाझीहडा तुंहरिं ॥ किंवादप्रेड्रियाच्चद्वारिं ॥ कल्पवक्षयाचक ॥ १५ ॥ तैसा
 रामयुत्थकांते ॥ मृणेपरपारावैमाते ॥ तक्तोजाणेनिराघवाते ॥ पुस्येकोरु
 केंकरोनीया ॥ १६ ॥ मृणेतुमच्चेनामवाऽस्त्रवण ॥ कोठेंजाताकायकारण ॥
 प्रगमेदिनीगर्भरलभुवणा ॥ कायकेलताजालाळा ॥ १७ ॥ रविकुक्लपंडणदृशस्थ ॥
 तोपित्ताजामुच्चायथार्थ ॥ याहेहाशिनावरघुनाथ ॥ जनसमस्तबोलति ॥ १८ ॥
 ऐसेंबोलतांरघुनंदन ॥ युत्थकमाताकरिरद्दुन ॥ मृणेयाच्चानोकेशिलाणतांवरण ॥

Sanskrit Mantra from the Yashwantrao Chavan Pralaya Manuscript

1121

नारसंपुरीहोतिला ॥२०॥ याचेचरणरजझगट्टां ॥ शिकाउधरिलीमीधुकेशिजा
 तां ॥ हेआम्होपहिलिचबोकिलिकथा ॥ भक्तसंतांचेनीमुरेवे ॥ २१॥ कठीणपाढाण
 लागतांचरणि ॥ इंद्रेतुल्यजालिंकामीनी ॥ नोकाकाळांचीततक्षणि ॥ पाय
 लागतांहोइला ॥ २२॥ कधाम्हणेपुत्राजवधारि ॥ याशिकदांनदालिंनावेवरि ॥
 नोकेचीजालियानारि ॥ कैशिज्ञाविकातुझीहोये ॥ २३॥ येकवनितायोशितां
 तुजसंकटहोयत्वता ॥ नोववरिर्यनाथा ॥ पुत्रासवेधावेसउनका ॥ २४॥
 मगमुद्यकम्हणेसवीतमा ॥ अगाधतुश्याचरणाचाम्हिमा ॥ तरितेचरण
 श्रीरामा ॥ मिच्छ्रभालिनस्वहुसं ॥ २५॥ पाषाणिचीजालिनारि ॥ हेतोच
 रणरजांचीधोरि ॥ तरितेमिधुईननिर्धारि ॥ मगनोकेवरिवेसविन ॥ २६॥ मग

राजवाडे राजवाडे राजवाडे राजवाडे
 राजवाडे राजवाडे राजवाडे राजवाडे
 राजवाडे राजवाडे राजवाडे राजवाडे
 राजवाडे राजवाडे राजवाडे राजवाडे

(4)

गुह्ये कें जाश्रमाशि नेतना ॥ वै स विलाज गमा हन ॥ जो माया तित शुद्ध चैतव्य ॥ पश्चाष्टि
रमण जगद्भूत ॥ २७ ॥ विधीहरि हर सह स्वनयन ॥ जावे ई छिते चरण रण स न कादि
का दुर्लभ पुणे ॥ करि तां साधन ना कर जाए ॥ २८ ॥ जे थुनि जन्मलि जानु कुमारि ॥ ते ॥ २९ ॥
चरण प्रस्ताक्षि न संकरि ॥ फ़के मुक्त आणि न इत्तर करि ॥ जनक जाप तपु जिला
॥ ३० ॥ तब के गुह्य कांचा हर्षित है ॥ जना उमा जिन समाये ॥ द्रढधरा निष्ठिरा
प्राचेपाये ॥ श्रेमक रुनि स्युदत ॥ ३१ ॥ हये स्वामि रघु कुकोटि का ॥ दया ब्यीमा
या चक्र चाके का ॥ अयोध्या पति ता ॥ रकांत का ॥ इउ करि ये ई मूरु गुनि ॥ ३२ ॥
स्वामि तुं परतो न अलि या विण ॥ मिं कदाहे न श्वी करि अन्न ॥ नाना भोग मंग
ठ स्नान ॥ न करि ये थुनी श्रिरामा ॥ ३३ ॥ जाणो नियो श्रेमक भक्त ॥ न श्रिरामत्या

॥आग॥१९॥

६४

॥दे॥

शिहुदं ईधरित ॥ मग्नेकाजाणुनि त्वरित ॥ जनकजामातवरिवैस ॥ ३३ ॥ सो
मित्रजाणिशितापति ॥ नीयेनोकवरिभारदति ॥ मग्नसुमंतां प्रतिरघुपति ॥
जाइजातीजाहाला ॥ ३४ ॥ सुमंतातुजायवोगे ॥ सकक्कदतांतरायाशिसांगे ॥
माझानमस्कारस्थांगे ॥ श्रीवाशलाशिकरिंको ॥ ३५ ॥ चतुर्दशावरषेंहोतां
पुणी ॥ प्रिसत्वरयेतांपरेतोन ॥ सकक्कल कांचिं समाधान ॥ करिं सुमंताजाउ
नियां ॥ ३६ ॥ त्वरेनेजायबहुत ॥ ग्रामाशियइले बंधुभरथ ॥ कोधंकर्नी
इशरथा बधीकयेक्खादातयाते ॥ ३७ ॥ याकारणें तुंसुमंता ॥ वोगंपरतोनि
जायजातां ॥ सुमंतउत्तरोनोरथारवालता ॥ चरणिमाथारेवितसे ॥ ३८ ॥ ४१ ॥
नयनोदकेंकरन ॥ क्षाक्षिलेतेक्खारामचरण ॥ सुमंतमृणमाझेने ॥ अयोध्ये

(3)

11811

शिनवजावे॥३१॥ मिसमागेमेयेइन॥ अथवायेथेंप्राणहेइन॥ परिप्रीनवजा
येंपरतोन॥ दुखद्यावयासमस्तं॥ ४०॥ दशरथउणिकोंशक्त्यामाता॥ दरवती
जेकारथरिता॥ यांचीकरावयाहस्या॥ माझेनतेथेंनवजावे॥ ४१॥ बनिसंडु
निरधुनायका॥ अयोध्येतप्रवेशतं देखा॥ प्रजल्लणतिक्काकुमुखा॥ कौं
दुंयेधेजालाई॥ ४२॥ मगरधुनाथप्ररिकाहुद्दै॥ लगेवारेचोत्तानकरि
काहिं॥ तुंअयोध्येशिश्चजाई॥ अजाजाप्राझोपाकिंआतां॥ ४३॥ माधांठेवि
लावरहुस्त॥ तणेशोकजालाईत॥ जस्तमेवैवष्टिंजहुत॥ जायविज्ञानी ॥४४॥
वणवा॥ ४५॥ मगजाजाघुनिसुप्रेन॥ औलतिरिंतुभाविकोकित॥ नावेत
ब्रेसेरधुनाथ॥ गुह्यकपरिपारानेतपै॥ ४६॥ जेसानिकतितटाकिंपावत॥ तेसा

॥५८॥

पूरतीरिं उभारधु नाथ ॥ सुप्रंताशि होतं पाल कीत ॥ जाय लवरित माधारा ॥ ४६ ॥ या
वरिपुठं पुष्करिणि ॥ तेष्ठं क्रमिलिये करजनि ॥ मग प्रयागा प्रति चापदाणि ॥ येता
जालोत्वेष्ठे ॥ ४७ ॥ द्वीष्ठी हेरवो निरधारि ॥ नंदन ॥ प्रयाग हिजाला पावन ॥ पु
ढंभारदाज उआश्रमारधु नंदन ॥ येता जाला साह्ये यें ॥ ४८ ॥ आला ईको निरधु
राज ॥ सामोराधा विं नहा भानुदा जनरा मन मस्का रिला दीज ॥ क्षेम अलिंग
न दिध्कें ॥ ४९ ॥ भारदाज बोत संप्रभा ॥ अजीमा सासफक जन्म ॥ त्रीभु व
न पत्ति अंगिराम ॥ ग्रहाशि आला महान नदी ॥ ५० ॥ माझी या पुण्याचा गिरिवरा ॥
भेदुनी गेता चीदांवर ॥ तरिच्छि तावरु भरधु विरा ॥ मुकें विणपातला ॥ ५१ ॥
सककं मंगक दाय करधु विरा ॥ जो मंगक भागि नीचा वरा ॥ मंगक माले चाउ निज

६

॥५॥

ध्यार ॥ करित जात दक्षणे ॥ ५२ ॥ जो पंचदृश रथ नं दन ॥ करावया सुरां चेवंध
 मोन्वन ॥ कमकणि मित्र कुकुभुषण ॥ येणोपधें चालिका ॥ ५३ ॥ तोंक्रुषीधां वति
 अपार ॥ कै सावेष्ठीला रघुविर ॥ दविं वेष्ठीत सहस्रनेत्र ॥ कीं कीर्णि तमीत्र
 विराजे ॥ ५४ ॥ कीं चंदन वेष्ठीत मकयात्रक ॥ कीं वीर कीं वेष्ठीला धन निक ॥
 किं वराभों वते सक क्वा वकुड़ा डिंच ॥ ५५ ॥ कीं साध कर्जे से निधान
 जवकि ॥ कीं रत्ना भों वति परिष्ठक ग ॥ किं कनका द्रीभों वति परकि ॥ कु
 चक्का भों वति विराजे ॥ ५६ ॥ कीं नस्त्री वेष्ठीला इशि ॥ कीं मां नस वेष्ठीला त ॥ ५७ ॥
 जहो इ ॥ ते सत्रपृष्ठि निअयोध्यानी वाइ ॥ भारद्वा ज आश्रमीं वेष्ठीला ॥ ५८ ॥
 भारद्वा ज वेष्ठीला रघु नं दन ॥ तेथें क्रमीला येक ही नम क्रुषी बोल त सुवन्धन ॥

॥आ० ११॥

(६८)

अजनं हनपुत्राप्रतिम५८॥ चतुर्दशवर्षे पर्यति मरामाराहें येथें स्वस्थ दं उकार
 प्याप्रतिवर्थी॥ कांसयाशीप्रजावें ॥५९॥ राघवस्त्रणयेथें तत्कृता॥ अयोध्येची
 याप्रजासमस्ता॥ ब्रांस्त्रणज्ञाणिं मातापिताम् येति भेटिशिनीश्चेयं ॥६०॥
 ज्ञात्रीगुप्तरूपेण येथुनि॥ प्रवेशमाह काननि॥ पुढिल भविव्याधिमनि॥ मुनि
 तुलीसर्वजाणत असा॥६१॥ अक्रृष्णज्ञाश्रमिक्रमुनियेकदिवस्॥ क्रृष्ण
 षिसपुसतउयोध्याधीशां पुढें च काजांनीवासमार्गजात्राशीदा
 विजै॥६२॥ क्षारद्वाजस्त्रणच्छीक्रुद्धवर्तिं॥ विद्वजनबहुतराहाति॥ तुली
 तेथें करावस्तीपकांहिं येकदिनराघवा॥६३॥ दिध्धवटपर्यंत॥ भारद्वाजें
 बोक्कविलारघुनाथपञ्जाइयेउनित्वरित॥ प्रयागाशीपरतला॥६४॥४॥

⑧

द्विष्ठवटदेवोनिनमन् ॥ करिपद्माक्षीरमणपद्याद्धवदेसावित्रीदेवि
युर्णपश्चितादेवोनीनमस्कारिमद्दृ ॥ विजईहोउनीरघुनंदनपवनिहुनिजा
लीयापरतोनपद्वोनलक्ष्मगोदानेंद्रेष्टदेइना ॥ बाल्युणसंतर्पणयथाविधीमद्दृ ॥
पुदेंचीत्रकुटावरिपचटलाशारयुतिरविहारित्तेथंवाल्मीकऋषिवास्त
व्यकुरितपबहुतऋषिसमवत् ॥ अद्युपाजैषनारदक्रोपेन्द्रेनिकेळंपञ्चवता
रभविष्यकंधिलं ॥ जैसेंकमकाउग्ररभरलंपसरोवरजङ्गदेविंद्दृ ॥
अवताराजाधीजन्मपत्रा ॥ फलेश्वरकादेस्यविस्तरपत्तेण्ड्रीष्टीदेवतांरघु
वीरपञ्चाश्रमाबाहेरधाविनलामद्दृ ॥ वाल्मीकान्योयेनीजन्मरणी ॥ प्राथोठ
विमोक्षदानीपवाल्मीकेवरचावरित्तचलुनीपक्षेमआलोंगनदिधलंपञ्चगावु ॥

一一

॥आ॒व।११॥

५८

ईतरासमस्तांदित्तवरां॥भेटलापरास्तरसोयरा॥सौमित्रेचित्रकुटिंत्यानवसरा॥पर्णकुटि
बांधिलि॥७३॥क्रृष्णमंडितरघुविरा॥चित्रकुटिंसहिताजगदोष्ठारा॥उद्यकेपाठउ
नियांहेर॥समारेन्नलापै॥७४॥चित्रकुटिंराहितारघुनायक॥सुमंताशीसांगेगुद्यका॥
रघववियोगेंदोद्यांदुख॥जत्यंतजालेत्तथवा॥७५॥गुद्यकेसुमंतयठाशिनेला॥त्यणे
मिथ्यिरामजातांकेदरेवेनडोङा॥असोरधा समवत्सुमंतपरतला॥वेगेपावलाजयो
श्येझी॥७६॥अयोध्यादिसेप्रेतवता॥रि-निष्ठवेशारधा॥सुमंलमुख्या॥वरिपङ्कवध
ता॥ज्ञाकेनियांचालिला॥७७॥सुमंतलूपजापुलमनि॥श्रीरामटाकुनिजालोंबनि॥
जेशीयामडअभाग्याशीजननि॥कायव्यर्थेर प्रसवलि॥७८॥कैकैसद्वासमेरा॥सुमं
लसोडुनिरहंवर॥मंहिरांतप्रेवेशसत्वर॥अलिमुखचंडउत्तरला॥७९॥रिताजाणि

(8)

॥७॥

लामाधारारथा ॥ अयोध्येतसमस्तजालं श्रव ॥ धरोधरिये कवि जो कांत ॥ शिताकांत
 वियोगे ॥ ७८ ॥ ईकेडेकेतिप्राणधरन ॥ कैकैसहनिजजनंदन ॥ सुमंतेनोदरवोन ॥ नमन
 करेंजलाजनसे ॥ ७९ ॥ राजाहृषेसुमंत्रजयन ॥ कोटेटाकिलेंराजिवनयन ॥ मजवा
 टतेमाझियाप्राण ॥ मुक्तजालाजिसल्वर ॥ ८० ॥ अपर्णवरहर्दैचेरल ॥ म्यातुझेहातिदि
 थलेपुर्ण ॥ घोरवनितेटाकुन ॥ कैसाजालाजिमाधार ॥ ८१ ॥ जगद्वयंवस्तुमाझिजाण ॥
 राकिलीकोणवनिनेउन ॥ श्रीराममाझेनिजउन ॥ कोण्याचोरेजोरिले ॥ ८२ ॥ राजहंस
 माझारघुनंदन ॥ पंकगतेतरोविलानेउबा ॥ माझसुडाक्षमुक्तपुर्ण ॥ मिरकाठनिदिल्कुकोठ ॥
 ॥ ८३ ॥ मजअंथात्तिकाटिब्बें ॥ हिरेनिकोटेलिनक्कें ॥ अरण्यमाजिमाझिबाँडे ॥ ॥ ८४ ॥
 उपवनाझीनिराहार ॥ ८५ ॥ सुंहरकसकुमारसुमनक्किं ॥ माझिमाउलिजनकबालि

सुमंतारथारवालेत्तरलि॥ कैशीचलिलिपथसांग॥ ८५॥ तेहिंभोजने कोठेकेलिवनि॥ श
 यनकेलेकोणो मेदिनि॥ सुमंतासांगमजलागुनि॥ देहटाकुनिताईबगि॥ ८६॥ मगनो सुमंत
 म्लानवदन॥ सांगेसकळवर्लेमान॥ निजदिवसनिराहारपुर्ण॥ लिघेजपेंहोलिपै॥ ८७॥
 त्रयासनिराजिवनेत्र॥ पहुडलाधनः शामगात्रा पाधरावयाअंबर॥ जापदासमग्रदेखि
 ल्लाम्या॥ ८८॥ श्रुगवेक्षपरियंत॥ म्याबोक्तिसारघुनाथ॥ जाचेनावेंजगतरत॥ तोगु
 ह्यकनेलापरिपार॥ ८९॥ याउपरि कृतणाकर॥ अयोध्येशीजायत्वेर॥ तेथुनिमजजग
 होथांर॥ निजकरेपालविलें॥ ९०॥ राजत्रानुहाशिनमन॥ राघवेंघातलेत्तेथुन॥ पु
 ढेचरणचालिरघुनंहन॥ केलेगमनवनवासा॥ ९१॥ डैसा अस्तागलाहिनकर॥ वे
 क्षावनिप्रवेशलारघुविर॥ यादिकेकुंउमातिवैश्वानर॥ आषादिलाडैसाकां॥ ९२॥

॥जोब॥ ८३॥ मायान्तित्तरत्तेत्तुन॥ सत्त्वत्तरत्तवेल्लिनि॥ असारेभत्तिरित्तुनेत्तुन॥
 उत्तिरित्तुनेत्तुन॥ असत्त्वत्तवेल्लिनि॥ असारेभत्तिरित्तुन॥

३

॥८॥

औं श्री सुमेता निवचने भुपाळ ॥ कर्णि आकर्णि लिता काक ॥ धबधबां वहस्थक ॥ पिदो
 निघेतते धवां ॥ ९६ ॥ सुमेता वनिरघु नंदन ॥ कै सातुं परतला दिसां उन ॥ अरेतुझे हद
 यनि हयुण ॥ कै सात्रापागे लानाहिं ॥ ९७ ॥ सुमेता तुं थोरधिर ॥ वज्ञाचे तुझें शरि र ॥ व
 निसां उनि रघु विर ॥ कै सायधवरि आलाशि ॥ ९८ ॥ गढामाडि युं तलामिन ॥ तैसात
 कमळि जननंदन ॥ श्रीरामवियोग नालगन ॥ जळि तपुर्णसर्वं ग ॥ ९९ ॥ लण्ठां व
 धावरघु नंदन ॥ सरोजने त्रासु हस्य वहन ॥ कौमठगात्रामालि याप्राण ॥ गलाशि
 वनाटाकें नियां ॥ १०० ॥ हृकफोडि लिहरा रवां थावें मातुलिये रघु नाथे ॥ मजसां उनि
 लान्हयातें ॥ गेलि सचना दुरहङ्गा ॥ १०१ ॥ रामाचलि ले रेमाले प्राण ॥ अंतकाकिहाविं ॥ १०२ ॥
 लुझें वहन ॥ औं सें बोलतां वटरि केनयवा ॥ सोउलापारामस्मरणो ॥ १०३ ॥ ४७ ॥

॥आग० १९७॥

रामरामकरितद्वारथा ॥ जालारामरपयथार्थ ॥ सुरदाशोकसमस्त ॥ हेतमातस्वरराहि
लि ॥ ७ ॥ पाहाइररात्रेकर्मगहन ॥ चौधे पुत्रद्वारथारिजसोन ॥ येकहि जवठनसेसो
उत्तांत्राण ॥ मगसुमंबप्रधानधविज्ञला ॥ रा नेपेउसामाडिहिधलि ॥ कौशाल्यासु
मित्राजवकिजालि ॥ लेकांयेकचिलावजालि ॥ माहाशब्देकरनियां ॥ ८ ॥ सत्यशत्रेरा
प्यासकक ॥ दुरेवपिरितिवहस्थठ ॥ हु बडिलेअयोध्यामंडक ॥ शोकतुंबठलोकातें ॥ ९ ॥
आकोषेसुमित्राकोशाल्यारडत ॥ गर्मवियागस्त्रेदुखवहुल ॥ त्यांतमृतपावलाद्वार
थ ॥ नाहिजेनशोकातें ॥ १० ॥ जैसेपायांशिखडिजेमाहाव्याकें ॥ तोमस्तकाशिखृष्णिकेना
डिलें ॥ किंवर्णवियांलप्राणिसांपउले ॥ त्यावरिताडिलेतस्करनि ॥ ११ ॥ आधिच्चहुंब
तथाकेकरन ॥ त्यावरिपउलापाषाण ॥ आधिच्चनवज्जरगेलाव्यापुन ॥ त्यांतविषयानपेजालें ॥ १२ ॥

१५

(१०)

॥१॥

अधिवयहाशिलागलाभव्वा॥ त्यावरिसाह्यजालाप्रसंजन॥ किंपुरिजातांबुडेन॥ तोंग
कायाघाणबघिला॥ ६॥ व्याघ्रभयेपकलांउगउठि॥ तोंरिसेंकंतिघातलिमीठ॥ तैसि
कौंशाल्जेशीजालिगोष्टि॥ लङ्काटपिरिजवनिये॥ ७॥ तोंतेयेंपातलाब्रह्मसुल॥ ब्लेण
शाककंकरितांव्यर्थ्य॥ आतांवेगिजाणावानरथ॥ राजिंवरितस्थापावा॥ ८॥ येक
राजाउभाराहिन्माविण॥ करंनयेराजहुज॥ आणि समियनसतांनेदन॥ कदांब
बहेउनये॥ ९॥ मगतैलदोणामाजिसत्तर॥ घातलेह्यारथाचेशिर॥ वहिष्ठ्येण
सुमेतालेरं॥ रथघेउनिधावेकं॥ १०॥ सुचांरथनहोतांयेये॥ वेगिघेउनियेझर
थालें॥ त्याचेकणीहेवोखटिमाल॥ सर्वधाहिसांयुनको॥ ११॥ वनशिगेलारघुनं ॥ १२॥
दन॥ अथवादहरथेसोडिलाप्राण॥ हेगुह्यत्याशिनसांगोन॥ वेगिघेउनियेझेजे॥ १३॥

।१३॥१९॥

(१०८)

भरथप्रेमकरामजका॥ हेगोष्ठिभैकतांविपरिता॥ लाल्काळदेहरेविललेय॥ यालागिश्र
तनकरावे॥ १५॥ भरथविरक्तचतुरावरिष्टा॥ जोज्ञानगोचानिर्मङ्गलोट॥ जोविकेक
रब्नाचामुगुटा॥ येकनिष्टसुभटज्ञो॥ १६॥ वैराय्यवैरागींचाहिरापुर्ण॥ जोआनंद
भुमिचेनिधान॥ जेविरक्तवल्लिचेसुगमन॥ लासमुद्गजाणसत्याच्चा॥ १०॥ जोझांसिहृ
हाचेपक्फढा॥ जोहयेचाजागरकुवडा॥ किउपरतिचानिर्मका॥ पुर्णवुंजउचंबक्ला॥
॥ १७॥ अैसासर्वगुणिआकंक्लता॥ वैगिर्युतानयेईभरथ॥ तैसाचनिधालासुमंता॥ जा
चार्यचरणवंदुनियां॥ १८॥ वायुवेगचाललासुमंल॥ स्वध्वन्नदेखेमालुक्षिंभरथ॥
उष्णावर्णवस्त्रवेष्टित॥ नरियेकदेखिलि॥ २०॥ त्वयोस्वप्ननकुहिसतोबनर्थ॥ जा
हिचौघबंधुआणिराजाद्वरथ॥ पाचामानिजिवधात॥ होईलयेकाचनिधारिं॥ २१॥

११

११९०॥

जाणित्राप्यसर्वांत्यन्तम् ॥ तोलंतरेलदुरबहुत ॥ धरणिवरिमस्सकभरथा ॥ भापटित
 शोकेतदधवां ॥ सराभाक्रंदोनिहाकदेत ॥ केविद्विष्टिदेवेनरघुनाथ ॥ राजाधिराजदश
 रथ ॥ अंतरलाभैसेवाटते ॥ २३ ॥ तवमातृकसंग्रामजित ॥ भरथादिश्वेहुङ्गहर्षिधरि
 त ॥ शत्रुघ्नाशिसमजवित ॥ शोकेव्यथकांकरिता ॥ २४ ॥ रजनिसरलालाठ ॥
 शीधकरनिचालुरंगदढ ॥ अयोध्यप्रतितावेक ॥ नेत्रनिघालितोलुह्याते ॥ २५ ॥ औ
 सेंबोललासरलिरजनि ॥ भरथशत्रुष्टुतेनि ॥ जगराबहुरेयेष्टनि ॥ मार्गलह्यिति
 अयोध्येचा ॥ २६ ॥ उर्ध्वेवद्वन्करनिचकार ॥ विलकितिजैसान्वड ॥ किंचक्रवाकेचिं
 लितिदिनकर ॥ किंवामयुरमेघाते ॥ २७ ॥ तेसाअयोध्येचामार्गलह्यित ॥ तांयेकये
 किदेखिलारथ ॥ वरेप्रद्यन्तसुमंत ॥ आरढोनियेतस्य ॥ २८ ॥ मंदमंदयतरहुंवर ॥

११९०॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com